जादू की अंगूठी

यूगोस्लाविया की कहानी

माटिजा

पहाड़ों पर बसे एक छोटे से घर में एक दयालु लड़का और उसकी बूढ़ी विधवा माँ रहते थे. वे बहुत गरीब थे. उनके पास सिर्फ वो झोपड़ी और एक बूढ़ी गाय थी. हर दिन लड़का बूढ़ी गाय को घास के मैदान में घास चरने को छोड़ता था और फिर वो जलाने की सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करता था. वो उन्हें बेचने के लिए गाँव ले जाता था और उन लकड़ियों से मिले पैसों से माँ और अपने लिए रोटियां खरीदता था.

एक दिन वो हमेशा की तरह गाँव में जलाऊ लकड़ी का एक बंडल लेकर गया. उन्हें बेचकर उसने रोटियां खरीदीं और उन्हें लेकर वो घर जाने लगा. लेकिन रास्ते में उसे कुछ चरवाहे लड़के मिले जो एक छोटे से पिल्ले को पीट रहे थे. लड़के को उस बेचारे प्राणी पर दया आई. फिर वो लड़का, चरवाहों के पास गया और उसने कहा :

"कृपया उस छोटे कुत्ते को चोट मत पहुँचाओ. उसकी बजाए तुम उसे मुझे दे दो?"

"ठीक है!" चरवाहों ने कहा, "तुम हमें अपनी रोटी दो, और हम तुम्हें कुत्ता दे देंगे."

फिर लड़के ने उन्हें रोटी दी और चरवाहों ने उसे पिल्ला दिया. पिल्ले को उसने अपनी बांह के नीचे रखा और घर ले गया. जब वो घर पहुंचा तो उसकी बूढ़ी माँ ने हमेशा की तरह उससे पूछा, "क्या तुम लकड़ियां बेंचकर घर पर कुछ रोटियां लाए हो?"

"नहीं, मैं रोटियां नहीं लाया," लड़के को जवाब दिया. "लेकिन मैं एक अच्छा सा कुत्ता लाया हूँ, मुझे उसके लिए अपनी सारी रोटियां देनी पड़ीं."

"तुम्हें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए था," माँ ने उसे डाँटा, "देखो, हम दोनों के लिए भी घर में कुछ खाना नहीं है, अब हम कुत्ते को भला कैसे खिलाएंगे?"

"अरे माँ, हम किसी तरह अपना जीवन चलाएंगे," लड़के ने कहा, "मैं फिर से बाहर जाऊंगा और कुछ और जलाऊ लकड़ियां बीनकर उन्हें गांव में ले जाकर बेचूंगा, और उन पैसों से मैं रोटियां खरीदूंगा. फिर हमारे पास खाने के लिए बहुत कुछ होगा - आपके और मेरे लिए और छोटे कुत्ते के लिए भी."

लड़के ने एक बार फिर जलाऊ लकड़ियां इकट्ठा कीं, उसने उन्हें गांव में बेंचा, फिर रोटियां खरीदकर अपनी मां के पास घर जाने लगा. लेकिन रास्ते में उसे फिर से वही चरवाहे मिले. इस बार वे एक छोटी बिल्ली को पीट रहे थे. लड़के को उस बेचारी बिल्ली पर तरस आया. इसलिए वो लड़का, चरवाहों के पास गया और उसने कहा :

"कृपया आप उस अच्छी छोटी बिल्ली को चोट न पहुँचाएँ. आप उसे मुझे दे दें. मैं उसकी देखभाल करूंगा?"

"बिल्ली के लिए तुम हमें क्या दोगे?"

"मेरे पास जो रोटियां हैं, वो ले लो," लड़के ने कहा.

"ठीक है," चरवाहों ने कहा, और उन्होंने लड़के को रोटियों के बदले में बिल्ली दे दी.

जब वो घर पहुंचा तो उसकी बूढ़ी माँ ने हमेशा की तरह उससे पूछा, "क्या तुम लकड़ियां बेंचकर कुछ रोटियां घर लाए हो?"

"नहीं, मैंने नहीं ला पाया. रोटियों की बजाए मैं एक अच्छी बिल्ली लाया हूं. बिल्ली को खरीदने के लिए मुझे अपनी सारी रोटियां देनी पड़ीं."

"पर उससे हमारा क्या भला होगा," माँ ने पूछा. "घर में हमारे खुद खाने को एक दाना नहीं है फिर हम भला बिल्ली को क्या खिलाएंगे?"

"ओह, सब ठीक हो जाएगा," दयालु लड़के ने कहा "मैं फिर से लकड़ियां बीनने के लिए जंगल जाऊंगा और उन्हें गांव में जाकर बेचूंगा, फिर हमारे पास खाने के लिए पर्याप्त रोटियां होंगी - आपके और मेरे लिए और कुत्ते और बिल्ली के लिए भी." फिर से लड़के ने सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा कीं और उन्हें गाँव में जाकर बेंचा. उन पैसों से उसने कुछ रोटियां खरीदीं और उन्हें लेकर अपनी माँ के पास घर जाने लगा. लेकिन फिर से उसे रास्ते में वही चरवाहे मिले. इस बार वे एक छोटे सांप को पीट रहे थे. हालांकि लड़के को सांप कोई खास पसंद नहीं थे, लड़के को उस पर बहुत तरस आया और फिर वो लड़का, चरवाहों के पास गया और उसने उनसे कहा :

"कृपया उस गरीब छोटे सांप को चोट न पहुंचाएं! आप उसे मुझे क्यों नहीं देते?"

"तुम हमें रोटियां दे दो, और हम तुम्हें साँप दे देंगे."

लड़के ने उन्हें रोटियां दे दी और उनसे साँप ले लिया. फिर वो सांप के साथ घर के लिए निकल पड़ा. लेकिन अचानक सांप ने बोलना शुरू कर दिया. उसने इंसानों की भाषा में कहा :

"धन्यवाद बेटा, तुमने मेरा जीवन बचाया. अब तुम मुझे मेरी मां के घर ले चलो. माँ से कहना कि तुमने उनकी बेटी की जान बचाई है. फिर माँ तुम्हें उदारता से पुरस्कृत करेंगी. वो तुम्हें चांदी, सोने आदि देने की कोशिश करेंगी लेकिन तुम उन चीज़ों को बिल्कुल मत लेना. तुम मेरी माँ से जादू की अंगूठी माँगना जो चिमनी के कोने में पड़ी होगी. वो अंगूठी, जादू की है और जब तुम उसे अपनी उंगली से रगड़ोगे तो बारह आज्ञाकारी शूरवीर तुम्हारे सामने प्रकट होंगे और तुमसे आदेश मांगेंगे और उसका पालन करेंगे. तुम उन्हें कोई भी आदेश दे सकते हो."

फिर लड़के ने सांप को उसकी माँ के घर पर छोड़ा.

"मैं आपकी बेटी को लाया हूँ. मैंने उसकी जान मैंने बचाई है," लड़के ने कहा.

माँ साँप खुश हुई और उसने कहा, "भगवान तुम्हें उसका सौ गुना इनाम देंगे! बताओ, मैं तुम्हें बदले में क्या दे सकती हूं?"

फिर माँ साँप ने लड़के को चाँदी और सोने से भरे संदूक दिखाए, लेकिन तभी लड़के को छोटे सांप की बात याद आई और उसने कहा :

"देखिये, अगर यह सब आपके लिए एक-समान है, तो आप मुझे वो छोटी अंगूठी दे दें जो चिमनी के कोने में पड़ी है."

जब अंगूठी को लेकर लड़का घर पहुंचा तो उसकी माँ ने पूछा, “तुम इतनी देर कहाँ थे? मैं बहुत भूखी हूँ, क्या तुम कुछ रोटियां लेकर आए हो?”

"नहीं," लड़के ने जवाब दिया "लेकिन मैं एक ऐसी चीज़ लाया हूं जो रोटियों से बहुत बेहतर है." और फिर लड़के ने जादू की अंगूठी को निकाला और उसे अपनी उंगली से रगड़ा. तुरंत बारह आज्ञाकारी शूरवीर उसके सामने हाज़िर हुए. उन्होंने उससे आज्ञा पूछी.

"हमारे लिए वो भोजन लाओ जिसे त्यौहार के दिन अमीर लोग खाते हैं!" लड़के ने आज्ञा दी.

बस पालक झपकते ही उनके सामने इतना सारा स्वादिष्ट भोजन मौजूद था कि उसके वजन से मेज झुक गई थी. उस दिन उन्होंने वो खाना खाया जो अपने जीवन में उन्होंने पहले कभी नहीं खाया था, माँ और बेटे और कुत्ते और बिल्ली ने मिलकर. उस दिन से उस लड़के को अब जलाऊ लकड़ी इकट्ठा नहीं करनी पड़ी क्योंकि अब उनके पास सब कुछ था.

समय बीतने के साथ वो धन-दौलत युवक के सिर में चढ़ गई. अब वो उन चीजों की इच्छा करने लगा जिनके बारे में उसने पहले कभी नहीं सोचा था. एक दिन उसने सम्राट की खूबसूरत बेटी को देखा और एक ही निगाह में उसे राजकुमारी से प्यार हो गया. उसी दिन उसने अपनी माँ को शादी के न्योते के साथ सम्राट के पास भेजा. लेकिन सम्राट ने जवाब दिया, "बूढ़ी औरत, अपने बेटे के पास वापस जाओ, और उससे कहो कि अगर वो मेरे महल के सामने के जंगल को काटकर उसे खेतों में बदल सकता है, जिसमें कल सुबह तक वहां गेहूं उगा हो और उस गेहूं से आटे के मैं अपने नाश्ते में पेनकेक्स (चीले) खा सकूं, तो मैं ख़ुशी से अपनी बेटी को आपके बेटे की पत्नी बनाऊंगा. लेकिन अगर वो फेल हुआ, तो मैं उसका सिर कटवा दूंगा!"

बूढ़ी माँ रोती-रोती घर पहुंची और उसने अपने बेटे को सम्राट की बात बताई.

"रो मत प्यारी माँ, सब कुछ अच्छा होगा," उसके बेटे ने कहा. फिर उसने अपनी उंगली की जादुई अंगूठी को रगड़ा. झट से बारह आज्ञाकारी शूरवीर उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए हाज़िर हुए. जब अगली सुबह सम्राट उठे, तो उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ. उन्होंने देखा कि महल के सामने का जंगल, खेतों में बदल गया था, जिसमें पका गेहूं लहलहा रहा था और उनके दरवाजे पर लड़के की बूढ़ी मां उनका इंतजार कर रही थी. वो उस आटे के पेनकेक्स बनाकर लाई थी. लेकिन, सम्राट ने अपना वादा निभाने के बजाए कहा :

"अपने घर जाओ और बेटे से कहो कि वो सामने वाली पहाड़ियों पर कल तक अंगूरों की बेलें लगाए. और अगर कल सुबह वो मुझे उन पके अंगूरों की शराब पिला सके तो मैं खुशी से अपनी बेटी को उसकी पत्नी बनने दूंगा. लेकिन अगर वो फेल हुआ, तो उसे फांसी पर लटका दिया जाएगा!"

बूढ़ी माँ रोती-रोती घर वापिस पहुंची और उसने अपने बेटे को सम्राट का संदेश सुनाया. लेकिन युवक ने कहा, "माँ रोना बंद करो, सब ठीक हो जाएगा." फिर से उसने अपनी उंगली की जादुई अंगूठी को रगड़ा और उन बारह आज्ञाकारी शूरवीरों को क्या करना चाहिए, वो उन्हें बताया.

और जब सम्राट सुबह उठा, तो वो अंगूर के बागों में गया. उसने रसीले अंगूरों को देखा और मीठी शराब का स्वाद चखा जो बूढ़ी औरत उसके लिए लाई थी. लेकिन सम्राट ने अपनी बेटी की शादी के लिए लड़के के सामने अंतिम चुनौती रखी. सम्राट ने बूढ़ी मां से साथ यह संदेश भेजा :

"अपने बेटे के पास वापस जाओ और कहो कि वो मेरे महल के सामने वाले मैदान पर मेरे महल जैसा ही एक नया महल निर्माण करे. महल के चारों ओर सुंदर बगीचे हों जिनमें फलों के पेड़ लगे हों, कुछ में फूल और कुछ में फल हों. बगीचे में सुंदर पक्षी हों जो मधुर गीत गायें, अगर वो दोनों महलों के बीच एक नई सड़क बना सकेगा तो मैं ख़ुशी से अपनी बेटी को, उसकी पत्नी बनने दूंगा. नहीं तो पृथ्वी पर उसके दिन गिने होंगे!

बूढ़ी माँ रोते हुए घर पहुंची और उसने अपने बेटे को सम्राट की बात बताई. लेकिन बेटे ने जवाब दिया, "रो मत, माँ, सब ठीक हो जाएगा," और फिर से उसने अपनी जादू की अंगूठी को रगड़ा और उसमें से निकले बारह आज्ञाकारी शूरवीरों को बताया कि उन्हें क्या करना है. इस बार, जब सम्राट सुबह उठे और उन्होंने पाया कि युवक ने उनकी सारी मांगें पूरी की थीं तो फिर सम्राट ने शादी की तैयारी के आदेश दिए. फिर युवा और सम्राट की खूबसूरत बेटी राजकुमारी की शादी हुई.

लेकिन जैसे ही वे शादी की दावत देने वाले थे कि पूर्व (ईस्ट) से एक महाराजा यात्रा पर वहां पहुंचे. सम्राट ने अपने मेहमान को कई बेहतरीन उपहार दिए, हालाँकि, दुष्ट महाराजा ने केवल युवा दूल्हे की अंगूठी की ही मांग की, क्योंकि उसे अंदाज़ था कि उसमें कुछ जादुई शक्ति थी. हालांकि लड़के ने हरेक जीवित इंसान से अपने इस रहस्य को अभी तक छिपाकर रखा था. पर अंत में एक चतुर चाल से महाराजा, युवक की जादुई अंगूठी लेने में सफल रहा. फिर महाराजा ने अपनी उंगली से अंगूठी को रगड़ा और तुरंत उनके सामने बारह आज्ञाकारी शूरवीर आए. वे अपने नए मालिक की सेवा के लिए तैयार थे.

"इस महल, राजकुमारी, और मुझे भी, दूर समुद्र के पार ले जाओ," उसने उन्हें आज्ञा दी. और तुरंत वैसा ही हुआ.

गुस्से में, सम्राट ने उस युवक को बुलाया और उसे महल और राजकुमारी को वापिस लाने का आदेश दिया. लेकिन बिना अंगूठी के उस गरीब युवक के पास ऐसा करने की शक्ति नहीं थी. इसलिए सम्राट ने उस लड़के को एक कालकोठरी में डाल दिया.

दुखी युवा फूट-फूटकर रोया, लेकिन किसी ने उसकी नहीं सुनी. सिर्फ कुत्ते और बिल्ली को ही उस लड़के की फ़िक्र थी चूंकि उसने ही उनकी जान बचाई थी. इसलिए कुत्ते और बिल्ली ने लड़के को खोजने और उसकी मदद करने का अपना मन बनाया. लेकिन वे उस कालकोठरी तक कैसे पहुंचे, जिसमें न तो खिड़की थी और न ही कोई रोशनदान? बिल्ली छत पर चढ़ गई, और अंत में उसे एक दरार मिली जिसमें वो रेंगकर अपने मालिक के पास पहुंची.

"मेरी मित्र," युवा लड़के ने बिल्ली से कहा, "अब तुम्हारी देखभाल कौन करेगा? देखो उस दुष्ट महाराजा ने मेरी अंगूठी चुरा ली है और मेरी सारी संपत्ति वो समुद्र से बहुत दूर ले गया है. प्रिय बिल्ली, अगर तुम केवल मेरे लिए उस अंगूठी को वापस ले आओ, तो सब फिर से ठीक हो जाएगा."

बिल्ली ने इन शब्दों को सुना और समझा, और फिर वो वापस कुत्ते के पास गई और उसने उसे सारी बात बताई. फिर उन दोनों वफादार दोस्तों ने अपने दयालु मालिक की मदद करने की ठानी. वे पूर्व की ओर चलते हुए वे जल्द ही समुद्र के किनारे पर पहुंचे. वहां अचानक उनके सामने छप! से एक मछली समुद्र तट पर आ गिरी. मछली ने एक मक्खी को पकड़ने की कोशिश में पानी से बहुत दूर छलांग लगाई थी! इसलिए वो अब सूखी रेत पर पड़ी थी. पहले तो बिल्ली के मुंह में पानी आया और उसका मन मछली खाने के लिए ललचाया, क्योंकि वो बहुत भूखी थी. लेकिन कुत्ते को मछली पर दया आई और इसलिए उन्होंने मछली को वापस समुद्र में फेंक दिया. मछली तुरंत तैरकर दूर चली गई.

बिल्ली तैर नहीं सकती थी, लेकिन कुत्ता तैर सकता था, इसलिए बिल्ली छोटे कुत्ते की पीठ पर बैठी, और कुत्ते ने तैरकर समुद्र पार किया. इस तरह वे अंततः महाराजा के महल में पहुंचे. अब कुत्ता बाहर रुका और बिल्ली महल के अंदर गई. जब बिल्ली महाराजा और राजकुमारी के कमरे में पहुंची तो उन्हें वो एक आकर्षक छोटी पालतू बिल्ली लगी. फिर महाराजा ने बिल्ली को अपने बिस्तर के मखमली तकिए पर सोने दिया. लेकिन जैसे ही महाराजा गहरी नींद में सोए बिल्ली ने धीरे से महाराजा की उंगली से जादू की अंगूठी को खींच निकाला. महाराजा को उसका कोई भान तक नहीं हुआ. फिर बिल्ली खिड़की से हल्के से बाहर खिसकी, जहाँ कुत्ता उसका इंतज़ार कर रहा था. फिर दोनों ने एक बार फिर से समुद्र की यात्रा की.

"देखो प्यारी बिल्ली," कुत्ते ने कहा, "तुम मेरे मुंह में वो अंगूठी डाल दो, वहां वो सुरक्षित रहेगी, क्योंकि मैं चीजों को मुंह में ले जाने का अभ्यस्त हूँ. लेकिन तुम से वो अंगूठी पानी में गिर सकती है!"

लेकिन बिल्ली अंगूठी को लाने का पूरा श्रेय खुद लेना चाहती थी, इसलिए वो कुत्ते की बात से सहमत नहीं हुई. इसलिए उसने अंगूठी अपने मुंह में ही रखी. फिर वो कुत्ते की पीठ पर चढ़ी और वे वापस समुद्र पार करने लगे. परन्तु बीच में एक भयानक बात हुई. कीमती अंगूठी बिल्ली के मुंह से फिसल गई और समुद्र के तल में डूब गई. कुत्ते को यह बात बताने की बिल्ली की हिम्मत नहीं हुई. बिल्ली को डर था की उससे कुत्ता इतना गुस्सा होगा कि कहीं वो उसे अपनी पीठ से पानी में न फेंक दे और उसे समुद्र में न डुबा दे. लेकिन जब वे किनारे पर सुरक्षित पहुंचे तो बिल्ली ने यह बात कबूल की कि उसने अंगूठी खो दी थी. पर इससे पहले कि कुत्ता, बिल्ली को डांटता, वो मछली तैरती हुई आई जिसकी जान उन्होंने बचाई थी. मछली अब उनकी मदद करने को तैयार थी. उसे समुद्र के तल पर वो अंगूठी मिली थी और अब उसने उसे समुद्र के तट पर फेंक दिया था. कुत्ते और बिल्ली ने मछली को धन्यवाद दिया और फिर अंगूठी को उठाकर कालकोठरी में ले गए. वहाँ बिल्ली जल्दी से छत पर चढ़ी और उसने दरार में से अंगूठी को युवा कैदी के पास में गिराई.

अंगूठी, कालकोठरी के फर्श पर गिरी और फिर लुढ़कते हुए युवक तक पहुंची. युवा लड़का बेहद ख़ुश हुआ और उसने अपने वफादार कुत्ते और बिल्ली का आभार माना. फिर उसने अपनी अंगूठी को उंगली से रगड़ा और एक बार फिर से बारह आज्ञाकारी शूरवीर उसकी आज्ञा पालन को हाज़िर हुए.

"मेरे लिए कुछ खाने के लिए लाओ और बाहर खड़े कुत्ते और बिल्ली के लिए भी. फिर यह देखो कि मैं तुरंत आज़ाद हो जाऊं, और मेरा महल राजकुमारी और महाराजा के साथ तुरंत अपने पुराने स्थान पर वापिस आ जाए."

युवक की बात तुरंत पूरी हुई. वो कालकोठरी से मुक्त हो गया, और महल राजकुमारी के साथ अपने पूर्व स्थल पर खड़ा था. युवक महल में जैसे ही घुसा राजकुमारी की नजर उस पर पड़ी. वो बहुत खुश हुई और वो उसके पास गई और उसने युवक के गले में अपनी बाँहें डाल दीं.

फिर, आखिरकार, उन्होंने शादी की दावत दी. ऐसी शाही दावत पहले कभी किसी ने नहीं देखी थी. सब ने पेट भर का खाया और जम कर शराब पी. मुझे पता है, क्योंकि मैं खुद वहां मौजूद था.

हाँ, लेकिन दुष्ट महाराजा को उन्होंने समुद्र के बीच में फेंक दिया.

समाप्त